

## Window >> 15.07.2001

A window has four eyes. Two eyes on the inside and two on the outside. The window looks at those inside. For instance: The house, you, guests. She listens to what they say. And sees their work. And sees the utensils, the cupboard, the refrigerator, the television, the stove, children, foodstuff, machine, cot, chair. She sees people eating food, people sleeping, dancing. Sees children and husband and wife fighting. She also sees marriages, as also death. Sees children being fed. Sees them being hit. She sees pictures, sees the clock, sees people studying, people teaching. She sees the door, sees the light, the fan, the cooler, the earthen pot. She sees cleanliness and filth. She sees many people working. She sees a motor, sees clothes. She sees slippers, medicines, mirror. She sees kerosene oil. She sees boxes with spices. She sees someone sweeping the floor.

The window saw, inside, two children are fighting. And the window saw that two women are talking. And she also saw a teacher who was teaching and the children were making noise. So the teacher scolds the children. And the window also saw that there is a marriage in one house, so the young and the old, and girls are all dancing together. And drinking cold water and making lots of noise.

The window sees many things on the outside. For instance: Plants and trees, fights, some donkeys and horses. Sees electricity cables and poles. Sees birds in the sky, lanes, a park, roads, dogs and cats. She sees people coming and going. Sees houses being constructed. Sees people on roofs, people flying kites, flying pigeons. She sees water coming. Sees water going. She sees rain coming. Sees the moon and the stars. Light being repaired. Men walking around in a drunken stupor. School children coming and going. Sees things in shops. Sees the ice cream seller, the juice seller, the biscuit seller.

## अपने बारे में >> 28.11.2001

मैंने शीशा देखा तो मुझे अच्छाई और बुराई दोनों नज़र आईं। बुराई ये नज़र आई कि मेरे चेहरे पर दाने हो रहे हैं और चेहरा फट रहा है। और सफ़ेद-सफ़ेद दाग़ हो रहे हैं। आँखें छोटी हैं। हँसते समय मेरी आँखें बहुत छोटी-छोटी हो जाती हैं। फिर दुबारा शीशा देखा तो मुझे अपनी नाक बहुत लम्बी दिखी। और सब कहते हैं कि मेरा क़द बहुत लम्बा है। फिर मैं किसी की बातों पर ज़्यादा ग़ौर नहीं करती। और मेरे हाथों की हड्डी बहुत कमज़ोर है।

मुझे बुरा लगता है। मेरे अन्दर बुराइयाँ तो बहुत हैं, पर मैंने कुछ लिखा है। मेरे अन्दर यह अच्छाई है कि मैं सुबह छः बजे उठती हूँ और रोज़ाना स्कूल जाती हूँ। और मेरी अटेन्डेन्स भी पूरी होती है। और मेरी मैडम भी मेरी तारीफ़ करती हैं। और स्कूल का पूरा काम करती हूँ। और मेरे अन्दर यह अच्छाई भी है कि मैं बहन-भाई, माँ-बाप, सबका कहना मानती हूँ।

मैंने शीशा देखा तो मुझे यह अच्छाई दिखी। मेरी भवें बारीक़ हैं। ऐसी लगती हैं जैसे बनवाई हों। और मेरे होंठ पतले-पतले हैं। मगर मुझे अपने होंठ तब बुरे लगते हैं जब उन पर सुख़्ख़ी नहीं लगती। मैं जब भी सुख़्ख़ी लगाती हूँ, मेरे होठों पर वो फैल जाती है। और मेरे बाल ज़्यादा लम्बे नहीं हैं। फिर भी मुझे अपने बालों से बहुत प्यार है।

The window saw, outside, two women are fighting over water. And they are pulling each other's hair. And the window also saw two children walking past, singing songs. They were singing this song: *yeh dosti hum nahin todenge*. Then the window laughs out aloud. Then the window also keeps singing this song. Then she sees, suddenly, four to five girls going somewhere.

जब भी मैं नहाती हूँ, पहले शीशे में देख-देख कर खुश होती हूँ।

सब कहते हैं कि मैं दो चोटियों में बहुत अच्छी लगती हूँ। और मैं जब आँखों पर लाइनर लगाती हूँ तो सब मुझे संगीता बिजलानी कहते हैं। और मेरी पलकें बहुत बुरी हैं। इतनी छोटी हैं कि जी करता है अपनी पलकें काट दूँ।

और मेरे में यह भी अच्छाई है कि बहुत हँसती हूँ। जो भी गुस्से में होता है, मैं हँसते-बोलते उसे हँसाती रहती हूँ। और जहाँ भी मायूसी होती है, सब मुझे ही बुलाते हैं। जब मैं चुप हो जाती हूँ तो सब कहते हैं कि हँसी का पिटारा बन्द हो गया। और जैसे ही मैं बोलती हूँ तो सब कहते हैं खुल गया हँसी का पिटारा। सब मुझे अच्छा भी कहते हैं, और कोई बुरा भी कहते हैं।



## Accidents >> 29.05.2001

**Turkhman Gate:** Here accidents happen on roads often. What I am about to tell you happened eight years ago. There is a school near Turkhman Gate, G.G.S. Sec. School, Bul Buli Khan, Asaf Ali, New Delhi. A terrible accident occurred here in which one ricksha puller and three to four school children were injured and one child died as well. On seeing the accident, one woman had a heart attack and she also died. People stopped sending their children to school. Fear had filled their hearts.

**Gandhi Market:** Here there is a place where there is a crossing. If it didn't have a red light, people would become used to seeing accidents. But one happened here as well. Many years ago, the daughter of our pradhan Roshan met with an accident that shook everyone's heart. This accident happened with a bus. People tell that on coming under the bus she died, but pieces of her brain lay fluttering, jumping around. Even today people tremble when recounting the accident.

**The road opposite here:** This road asks for one sacrifice every year, people say. Ten years back, a woman who was pregnant, and a small girl (four years old) were crossing the road when a bus came and the girl was run over. She came under the tyre of the bus. She pulled hard at her mother and she fainted, screaming. And why wouldn't she have? I saw this with my own eyes. When I saw the girl, she didn't have eyes and her head had become flattened against the road. I can still see that face clearly and then the whole incident gets replayed in my head. Then police arrested the bus driver and friends and relatives of the woman broke the bus.

An year back, two boys were listening to music while driving their car. They too met with an accident with a car. They lived at Turkhman Gate. This had caused quite a sensation.



## अंधेरा >> 07.11.2001

अंधेरे से मुझे कभी-कभी बहुत डर लगता है। वो इसलिए कि हमें अंधेरे में एक दूसरे का चेहरा नज़र नहीं आता। अगर नज़र भी आता है तो वो कुछ अलग-अलग सा लगता है। किसी का चेहरा इतना भयानक नज़र आता है जिससे इंसान डर-सा जाता है! मुझे भी अंधेरे में चेहरे भयानक नज़र आते हैं!

रोशनी में आते ही कुछ मिनट बाद ही हम वो चेहरा भूल तो जाते हैं। पर फिर अंधेरे में जाकर वो चेहरा हमारे चारों ओर घूमने लगता है, जिससे अंदर बाहर दोनों तरफ़ से डरने लगते हैं। कभी-कभी अगर हम कोई भूत की फिल्म देखते हैं तो वो हमारे दिमाग़ में घूमती है। तो तब हमें उजाले में भी डर लगता है। पर उस डर को हम ज़्यादा महसूस नहीं कर पाते क्योंकि हमारे आस-पास का एक माहौल होता है। कुछ चेहरे होते हैं जो हम देखते हैं और हमें डर का अहसास नहीं होता। लेकिन जब हम अकेले हों तो हमें बहुत डर लगता है।

एक बार मैं जब 10-12 साल की थी, तब मैं अपनी ख़ाला के घर में रहती थी। मेरी ख़ाला की जेठानी की दो बेटियाँ थीं। वो अकसर रात के समय बिलकुल अंधेरा करके सोने की आदी थीं। मैं भी कभी-कभी ऐसे सो जाया करती थी, पर थोड़ी सी रोशनी हो तो अच्छा लगता है। ऐसे ही एक बार रात को मैं लेटी थी। वो दोनों काफ़ी बड़ी थीं। एक का नाम तबस्सुम, दूसरी का नाम तरन्नुम था। तबस्सुम बड़ी थी। उसकी उम्र 22 साल थी। वो 5 फुट की थी। आँखें बड़ी-बड़ी और गोल, रंग बिलकुल साफ़,

It was during ramzaan, before Eid. A young man was going towards Delite after his evening prayers when he got run over by a truck. Lots of blood flowed out of his body. My younger brother had gone to see it. He told me.

Whenever there is an accident around here, silence descends upon the colony and for many days, it is all that is discussed.

पतले-पतले होंठ, चेहरा भी पतला, नाक खड़ी। तरन्नुम तबस्सुम से छोटी थी। वो 20 साल की थी। उसकी भी बड़ी आँखें, पतले होंठ, चेहरा थोड़ा चौड़ा और भरा हुआ था। क़द पाँच फुट, जिस्म दरमियाना। वो तबस्सुम से ज़्यादा ख़ूबसूरत लगती थी! मैं, और वो दोनों, हम लोग रात को उस रूम में सो रहे थे। हमारे रूम और दूसरे रूम के बीच में एक सिलाइडिंग बनी हुई थी। अकसर रात को वो सिलाइडिंग बंद रहती थी। पर उन दिनों तबस्सुम के अब्बाजी की तबीयत ख़राब चल रही थी। (उनके अब्बाजी की उम्र 65 साल है। वो बूढ़े लगते नहीं हैं। उनकी थी बड़ी-बड़ी आँखें, पतले होंठ, चेहरा भरा हुआ और गोल सर जिसके बीच के हिस्से के बाल कुछ कम थे, पर बाल थे। वो थोड़े मोटे हैं।) उस सिलाइडिंग के बिलकुल सामने एक डबल बेड बिछा था। और उसकी पास वाली दीवार पर पर्दे टंगे थे। लाईट गुलाबी कलर के। बेड पर चाचा जी सो रहे थे और उनके रूम में नाइट बल्ब जल रहा था, जिसके कारण मुझे अपने रूम में से उनकी थोड़ी-थोड़ी सूरत नज़र आ रही थी। लेकिन उनकी सूरत मुझे कुछ अजीब सी लग रही थी। उनको देखकर कभी तो मुझे लगता जैसे वो मुझे मुँह चिढ़ा रहे हैं! पर मैं सोचती कि नहीं, चाचा जी मुझे मुँह क्यों चिढ़ायेंगे! कभी लगता वो चेहरा बदल कर मुझे डरा रहे हैं। कभी, जैसे वो पूरी आँखें खोले हुए हैं और सोने का नाटक कर रहे हैं! मैं कभी तो एक दम घबरा जाती, कभी अपने आपको दिलासा देती। कभी तो एकदम आँखें बंद कर लेती। तब एक सपना ख़ुद बनाती कि चाचा मुझे भूत बनकर डरा रहे हैं! चाचा मुझे मार डालना चाहते हैं! फिर मेरा पूरा जिस्म कंपकंपाने लगता और दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगता। फिर सोचती उठकर लाइट खोल कर सोऊँ। पर उठने की

## Jhur...jhur...jhur >> 23.05.2001

I looked where the frames of doors were being made, a window was being made. Thuk... thuk... thuk... Then I looked at a shop. Just then a motor cycle sped past. It looked brand new. A man was sitting on it. Grrr... grrrr...rrr...grr. There a man was coming to start his two-wheeler. The motor cycle had gone far away so I could hear it much less. And the sound of the scooter starting could be heard. Toorak...toorak...kkk...kkk... I was passing by a lane when I heard the sound of water from a tap. Jhur... jhur...jhur. Up ahead, some people were speaking with one another.

Then I walk ahead and see two or three people buying things from a grocery. Just then, an empty bottle of cold drink slips out of a child's hand and breaks. Kun... nnn... tus... So the boy has to give the shopkeeper money instead of the bottle. In the shop also sat its owner, whose name is Ramdas, whose age must be 40. In his shop you get flour, pulses, rice, oil, soap, pain killers and also cold drinks etc.

भी हिम्मत नहीं हो पाती। मैं क्या करूँ? थक कर मैंने धीरे से तरन्नुम बाजी को आवाज़ दी। मेरे आवाज़ देने पर उन्होंने नहीं सुना तो मैंने पलट कर उनकी तरफ़ देखा, तो देखा कि मेरे ही पास भूत लेटा है! उनका चेहरा भी अलग-अलग रंग बदल रहा था! ओह! दो मिनट उनको आँखें फाड़े देखती रही। फिर जल्दी से करवट बदल ली। और सोचा कल से मैं उनके पास नहीं सोऊँगी। फिर सुबह उठकर मैंने तरन्नुम बाजी से उनके अब्बाजी के बारे में कहा तो पहले तो उन्होंने हँसी में टाल दिया। मैंने फिर सीरियस होकर कहा, मैं आज आपके पास नहीं सोऊँगी। तो वो एकदम बोलीं, क्यों? पागल ये तेरे दिल का वहम है। भला अब्बा जी तुझे क्यों डराएंगे! और फिर अंधेरे में इंसान के चेहरे बदले-बदले दिखते हैं। चल तू लाइट खोलकर सो जाना। उन्होंने इतना कह तो दिया पर मेरे दिल को तसल्ली नहीं हुई और मैं अगले दिन से उनके रूम में न सोकर अपने खाला-खालू के कमरे में सोई। वो बेड पर सोते थे और मैं ज़मीन पर अपना बिस्तर लगा कर सोती थी। जिससे मुझे उनका चेहरा देखने का मौक़ा ही नहीं मिलता। मुझे लगता है कि क्योंकि हम अंधेरे में रंग नहीं देख पाते, हम अंधेरे से डरते हैं। आप को क्या लगता है?



## Roof >> 19.09.2001

It was five thirty in the evening. I climbed onto the roof. My younger brother Rehan was flying a kite. Our roof is the lowest in our colony. Everyone else's is quite high and some even have two to three storeys constructed. I spread a sheet on the roof and sat down. Our neighbouring house is two-storeyed. On its roof, a boy was doing his work from school. He was Raju. He was in the eighth class. I didn't use to speak much with him. And he also used to stay quite aloof. Because in my house, there are many restrictions about such things. Sometimes because of some need or some work if he spoke with me, he would address me as his elder sister.

My brother's kite was flying in the direction of his roof. A wind was blowing at this time. Many people (boys, children, girls) had climbed onto their roofs. The sound of a deck playing somewhere could be heard. Also could be heard the sound of girls laughing and chatting.



## खिड़की >> 15.07.2001

खिड़की की चार आँखें होती हैं। दो आँखें अन्दर, और दो आँखें बाहर। खिड़की अन्दर वालों को देखती है। जैसे: घर, आप, मेहमान। उनकी बातें सुनती है। और उनके काम देखती है। और देखती है बर्तनों को, अलमारी को, फ्रिज को, टी.वी. को, स्टोव को, बच्चों को, खाने के सामान को, मशीन को, चारपाई को, कुर्सी को। खाना खाते हुए देखती है, सोते हुए देखती है, डांस करते हुए देखती है। बच्चों और मियाँ-बीवी की लड़ाई होते हुए देखती है। शादी-ब्याह भी देखती है। और मौत भी देखती है। बच्चे खिलाते हुए देखती है, मारते हुए देखती है। तस्वीरें देखती है, घड़ी देखती है, पढ़ते हुए देखती है, पढ़ाते हुए देखती है। दरवाजा देखती है, बत्ती देखती है, पंखा देखती है, कूलर देखती है, मटका देखती है। सफ़ाई देखती है, गन्दगी देखती है। बहुत से काम करते हुए देखती है। मोटर, कपड़े देखती है। चप्पलें देखती है। दवाइयाँ देखती है। शीशा देखती है। मिट्टी का तेल देखती है, मसालों के डिब्बे देखती है। झाड़ू देते हुए देखती है।

खिड़की ने अन्दर देखा कि दो बच्चे लड़ रहे हैं। और खिड़की ने देखा कि दो औरतें आपस में बातें कर रहीं हैं। और खिड़की ने यह भी देखा कि एक टीचर जो कि पढ़ा रही है और बच्चे शोर मचा रहे हैं। तो टीचर बच्चों को डाँटती है। और खिड़की ने यह भी देखा कि एक घर में शादी हो रही है, तो सब बच्चे-बड़े, लड़कियाँ सब मिलकर डांस कर रहे हैं और ठण्डा-ठण्डा पानी पी रहे हैं और खूब शोर मचा रहे हैं।

## The Day After... >> date not known

There is an earthquake...everyone is dead. How did I survive? The question will haunt me. It is possible that I would die of shock of losing my family members. If I manage to survive I will be happy to be a free bird. And the sole owner of the basti.

But the government will take away all this land. First of all I will extricate the survivors in the basti. I will make do with the belongings left in the collapsed houses. As I will be the only one left, the police, Press and the TV wallas will come to interview me. On such an occasion, I will miss my friends and relatives very much. But what had to happen has happened. Whether I get government relief or not, I will have to help myself.

If I receive government aid, I will use it to complete my education. The other relatives will come too, but what do they have to offer except solace. I will be surrounded by a fleet of ambulances... I'm feeling sad looking at the dead bodies... some of which will make me cry. Friends, brothers, parents, sisters, neighbours, enemies.... I have lost them all.

There is absolutely nobody to support me. I tell God: Why did you do this? You should have left someone to look after me. I have been left alone. At least send my Mayadi from Calcutta. I would like to live...

खिड़की बाहर बहुत सारी चीजें देखती है। जैसे: पेड़-पौधे देखती है, लड़ाईयाँ देखती हैं, घोड़े-गधे देखती है। गाड़ियाँ देखती है। बिजली के तार और खंबे देखती है। आसमान पर परन्दि, गलियाँ, पार्क, सड़कें, कुत्ते-बिल्लियाँ देखती है। आते-जाते लोग देखती है। घर बनते हुए देखती है। ऊपर छतों पर लोगों को देखती है। पतंग उड़ाते हुए देखती है। कबूतर उड़ाते हुए देखती है। पानी आते हुए देखती है। पानी जाते हुए देखती है। बारिश आते हुए देखती है। चाँद-तारों को देखती है। लाइट सही होते हुए देखती है। आदमियों को शराब पीकर झूमते हुए देखती है। स्कूल के बच्चों को आते-जाते हुए देखती है। दुकानों की चीजों को देखती है। आईसक्रीम वाले को, जूस वाले को, बिस्कुट वाले को देखती है।

खिड़की ने बाहर देखा कि दो औरतें पानी के ऊपर लड़ रहीं हैं। और एक-दूसरे के बाल पकड़े हुए हैं। और खिड़की ने यह भी देखा कि दो बच्चे गाना गाते हुए जा रहे हैं। वो दोनों ये वाला गाना गा रहे थे - ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे। फिर खिड़की ज़ोर-ज़ोर से हँसती है। फिर खिड़की भी यही वाला गाना गाती रहती है। फिर खिड़की अचानक बाहर देखती है तो चार-पाँच लड़कियाँ कहीं जाती हुई दिखाई देती हैं।